ISSN No. 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 4, अंक : 1, जनवरी 2017

विश्वविद्यालयों में संगीत के पाठ्यक्रम के अंतर्गत क्रियात्मक शिक्षण में लोक पद्धति

डॉ. रिचा जैन

निवर्तमान असिस्टेंट प्रोफेसर, कालिंदी, विवेकानंद एवं भारती कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सामान्यतया भारतीय विश्वविद्यालयों के संगीत के पाठ्यक्रम के अंतर्गत शास्त्रीय संगीत के गीत प्रकार एवं शैलियों का पठन एवं पाठन क्रियात्मक एवं शास्त्र पक्ष के अनुसार होता है। लोक संगीत को इतना महत्त्व नहीं दिया जाता है। हाल में शास्त्र पक्ष के अंतर्गत इसका कुछ समावेश किया गया है, परंतु क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत लोक संगीत अधिकतर विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में नहीं है।

लोक संगीत जन साधारण से जुड़ी संगीत पद्धति है, जिससे समस्त शास्त्रीय संगीत का उद्भव माना जाता है। पहले जो लोक संगीत था, वही बाद में परिष्कृत होकर शास्त्र युक्त बनने से शास्त्रीय संगीत कहलाया गया। प्राचीन समय में मार्गी एवं देशी, ये संगीत की दो धारायें मानी जाती थीं।

पंडित शारंगदेव के अनुसार—

यो मार्गितो विरिन्चाद्यै प्रयुक्तो भरतादिभिः।
देवस्य पुरतः शंभोर्नियताभ्युदयप्रदः।।
देशे देशे जनानां यद्रुच्या हृदयरंजकं।
गीतं च वादनं नृत्तं तद्देशीऽत्यभिधीयते।।
(संगीत रत्नाकर, श्लोक 22, 23)

अर्थात गायन, वादन तथा नृत्य, तीनों का सम्यक स्वरूप संगीत कहलाता है, जो दो प्रकार का है, यथा—मार्गी एवं देशी। वह जिसे ब्रह्म द्वारा खोजा गया तथा भगवान शिव के समक्ष भरत इत्यादि द्वारा जिसका अभ्यास किया गया, मार्ग संगीत के रूप में जाना गया, जबकि भिन्न-भिन्न प्रदेशों के लोगों की रुचि के अनुकूल उनका रंजन करने के उद्देश्य में गीत, वाद्य एवं नृत्य युक्त संगीत देशी कहलाता है।

यद्यपि मार्गी संगीत शास्त्रोक्त एवं देशी संगीत प्रादेशिक संगीत प्रतीत होता है, फिर भी ये दोनों धारायें शास्त्रीय संगीत पद्धति का ही अंग हैं। कालांतर में संभवतः लोक शैलियाँ नियमों के बन्धन से युक्त होकर शास्त्रीयता ग्रहण कर लेती हैं तथा लोक रंजन और प्रादेशिक रुचियों के अनुकूल नवीन लोक शैलियाँ उत्पन्न होती हैं, जो तत्कालीन देशी धारा का रूप ले लेती हैं।

अतः शास्त्रीय एवं लोक शैलियाँ परस्पर पोषित होती हैं तथा संगीत शिक्षण के लिये दोनों का शास्त्र एवं क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत पाठन-पठन अनिवार्य है।

उदाहरण—

मांड एवं पहाड़ी लोक शैलियों ने रागों का रूप अपना लिया है, अर्थात वे शास्त्रीय नियमों से युक्त हो गयी हैं। अधिकतर शास्त्रीय गायक अन्य शास्त्रीय गीत प्रकारों के पश्चात इनका भी गायन करने लगे हैं। अतः इनका समावेश शास्त्रीय पद्धति के अन्तर्गत माना जा सकता है।

1. मांड रचना

राजस्थान क्षेत्र में प्रचलित 'मांड' शैली का राग के रूप में समावेश बिलावल ठाठ के अन्तर्गत माना जाता है, परंतु लोक गीत प्रकारों में मांड शैली खमाज ठाठ के अधिक निकट है। इसमें स्वरों का वक्र प्रयोग पाया जाता है, यथा—सा म ग प म ध प नि ध सां। सां ध नि प ध म प ग रे ग सा। वादी एवं संवादी स्वर क्रमशः 'सा' एवं 'प' हैं।

'राजस्थान का लोक संगीत' पुस्तक में डॉ. शन्नो खुराना के अनुसार मांड के चार प्रकार हैं , यथा—

1. सूब मांड
2. सामेरी मांड
3. आसा मांड
4. शुद्ध मांड

प्रस्तुत उदाहरण दादरा ताल में निबद्ध मूमल गीत है, जो शुद्ध मांड के अन्तर्गत माना जाता है। इसकी स्वरलिपि एवं बोल इस प्रकार हैं :

स्थायी :
काली तो काली काजलिया री रेखरी
काली तो बादल में चिमके बीजली
ढोलारी मूमल हाले तो ले चालूं मुरधर देस

अंतरा :

1. सीस मूमल रो बागडियो नारेल सा
चोटी तो मूमल री बासग नाग जी
ढोलारी मूमल हाले तो ले चालूं मुरधर देस

2. नाक मूमल रो सूवा के री चांच सा
अखियाँ मूमल री प्याला मद भरिया
ढोलारी मूमल हाले तो ले चालूं मुरधर देस

3. पेट मूमल रो पीपलियारो पान सा
हीवलरो मूमल रो साधे ढालियो जी
ढोलारी मूमल हाले तो ले चालूं मुरधर देस

स्थायी :

X			**0**		
ग	ग	मग	रे	सा	–
का	ली	तो	का	ली	ऽ
रे	म	म	प	ध	–
का	ज	लि	या	री	ऽ
पध	नि	सां	निध	प	–
रेऽ	ऽ	ख	रीऽ	ऽ	ऽ
सां	सां	–	नि	ध	–
का	ली	ऽ	तो	बा	ऽ
पध	म	–	पध	ध	–
दल	मे	ऽ	चिम	के	ऽ
गम	धप	म	गरे	सारे	सा
बीऽ	ऽऽ	ज	लीऽ	ऽऽ	ढो
X			0		
रे	म	म	प	ध	ध
ला	री	ऽ	मू	म	ल
म	प	–	धप	ध	म
हा	ले	ऽ	तोऽ	ऽ	ले
ग	र	–	सारे	गरे	गरे
चा	लूं	ऽ	मुर	धऽ	रऽ
सा	–	–	सा	–	–
दे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स

इसी प्रकार अन्य अन्तरे गाये जाएँगे।

2. पहाड़ी रचना

पहाड़ी क्षेत्र में प्रचलित 'पहाड़ी' शैली का भी राग के रूप में समावेश बिलावल ठाठ के अन्तर्गत माना जाता है। प्रचार में अवरोह में कोमल नि का प्रयोग मिलता है। मांड की तुलना में स्वरों का सीधा प्रयोग इसे मांड से अलग करता है, यथा—

सा रे म प ध सां नि ध प म ग रे सा । 'ध' एवं 'सा' की संगति सुंदर प्रतीत होती है। प्रस्तुत उदाहरण कहरवा ताल में निबद्ध है। इसकी स्वरलिपि एवं बोल इस प्रकार है—

स्थायी :

लोकी तां देंदे सानु ताने हाय रब्बा होय।

अंतरा :

नीकी जयी गलदा बन गया सपवे कानु दुख झरना पया हाय रब्बा होय।

स्थायी :

X				**0**			
				सा	–	रे	–
				लो	ऽ	की	ऽ
ध़	–	–	–	सा	–	–	–
तां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	रे	म	रे
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दें	ऽ	ऽ
म	–	–	–	–	–	–	–
दे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	ध	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सा	ऽ	नु	ऽ
प	ध	नि	ध	प	म	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	–	–	रे	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ता	ऽ

X				0			
म	–	–	–	–	–	–	–
ने	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	–	म	–	म	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हा	ऽ	य	ऽ
ध	–	प	–	म	–	ग	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	–	ग	–	–	–	रे	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ
सा	–	र	–	सा	नि़	ध़	–
ब्बा	ऽ	ऽ	ऽ	हो	य	ऽ	ऽ

अंतरा :

X				**0**			
–	म	म	–	ध	–	सां	–
ऽ	नी	की	ऽ	ज	यी	ऽ	ऽ
सां	–	–	–	सां	–	–	–
ग	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽ	दा	ऽ
–	नि	–	–	सां	–	–	–
ऽ	ब	न	ऽ	ग	ऽ	या	ऽ
ध	–	(सां)	–	नि̱	ध	प	–
स	ऽ	प	ऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ
–	–	ध	–	ध	–	ध	–
ऽ	ऽ	का	ऽ	नु	ऽ	दु	ऽ
ध	प	म	रे	रे	म	प	(नि̱)
ख	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
X				**0**			
–	ध	–	–	ध	–	ध	–
ऽ	झ	र	ऽ	ना	ऽ	ऽ	प
म	–	–	–	म	–	म	–
या	ऽ	ऽ	ऽ	हा	ऽ	य	ऽ
ध	–	प	–	म	–	ग	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	–	ग	–	–	–	रे	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ
सा	–	रे	–	सा	–	–	–
ब्बा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हो	ऽ	ऽ
नि̱̣	ध̣	–	–	सा	–	रे	–
य	ऽ	ऽ	ऽ	लो	ऽ	की	ऽ

(उपलिर्खित उदाहरणों का क्रियात्मक प्रदर्शन)

विषय चुनने का उद्देश्य

पारिवारिक रूप से राजस्थान से जुड़े होने के कारण मेरा रुझान राजस्थानी लोक संगीत, विशेष रूप से मांड गायन की ओर रहा है।

शास्त्रीय गायन के शिक्षण के पश्चात उप-शास्त्रीय शैलियों जैसे ठुमरी, टप्पा आदि के साथ लोक शैलियाँ जैसे पहाड़ी, मांड इत्यादि सीखने की इच्छा जागृत हुई। आश्चर्य की बात थी कि संस्थानगत शिक्षण के अन्तर्गत यह संभव नहीं था। क्रियात्मक पक्ष का पाठ्यक्रम अत्यंत सीमित था। विश्वविद्यालय और कॉलेज के संगीत विभागों में होने वाली क्रियात्मक परीक्षा में कुछ चुने रागों में बद्ध विलंबित और द्रुत ख्याल अथवा कोई ध्रुपद या धमार ही सुनने में आते हैं।

जहाँ के पाठ्यक्रम में लोक शैली सुनाने का प्रावधान है भी, वहाँ परीक्षार्थी स्वयं तैयार करता है। यदि कहीं पर शिक्षक द्वारा सिखाया जाता है, तो वह ना के बराबर है।

अत: इस विषय पर कुछ चर्चा की जाय, ऐसी मुझे आवश्यकता प्रतीत हुई, अन्यथा यह समृद्ध धरोहर कहीं विलुप्त ही न हो जाय।

प्रस्तुत शोध पत्र में प्रयुक्त प्राविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में तथ्यों के संकलन हेतु निम्न रूप से लिखित प्राविधि का प्रयोग किया जाएगा, यथा

1. साक्षात्कार

2. अवलोकन

3. साहित्य

4. सी.डी. इत्यादि अथवा प्रत्यक्ष रूप से क्रियात्मक प्रदर्शन।

पाद-टिप्पणियाँ

1. पंडित शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर, पृ. 14, भाग-1, अड्यार पुस्तकालय प्रकाशन, मद्रास
2. राजस्थान का लोक संगीत, शन्नो खुराना, सिद्धार्थ पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. 24
3. वही, पृ. 120, 155
4. लेखन ने स्वयं यह बंदिश डॉ. शन्नो खुराना से सीखी है
5. 10 मई 2015 को स्वाति विश्वास और किरण से लिए गए साक्षात्कार पर आधारित। ये दोनों विद्यार्थी हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के ओपन स्कूल, एम. ए. संगीत के विद्यार्थी हैं।